

DPN 5485

Title: उग्रचण्डा देवी मन्त्राङ्ग स्तोत्र / UGRACANDĀ DEVI MANTR-
ĀŅGA STOTRA

Run. No. 6176

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Newa direction

Size in cms. 20.5 x 7.5

Folios 5

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus.: Mantra monogram

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

१२३

३३५ अष्टादश म-सा-स्तोत्र

नैवशं ॥ नैवशं गृहीतं देवी रुक्मि भजव लीकव । ॐ सिगम वन दहि य
नशव य गांगि ॥ घन १ वाव मनीय नम ॥ रु लय कान्न गामूल पूय
दीय ॐ दं नैवशं नम ॥ गय्यं १ ॥ जाय १ ॥ शो साहा ३ ॥ शो साहा ३
॥ श्री साहा ॥ शु साहा १ ॥ शु साहा १ ॥ ॥ मणु लदय क रूण ॥
श्री गुरु नमः ॥ श्री महा रु व वाय ॥ श्री दय वाव ॥ श्री संव र्ण मणु ला
नैवशं यद संगान नन्द ग कि सरी मा रु र्ण न्याय व १ ॥ रु गुरु लक

लगनं यश क शाय मर्क । चत्वारः यश क शाय यून वयि वरु वन
रु लमणु लद संरु र्ण जन गस्मै नम गिगु व व र्ण व वं श्री कृष्ण ॥
वन्द्य सदा शिव वया ॥ ॐ नमः १ ॥ श्रु काये ॥ नमः १ ॥ महा द ॥ न व
श्रु क वणु विक्रम । विष्णु विजग दाहि कि गि स र्ण का विलि ॥
दूर्ज या निविन रु उ म रु वे वि वि ना गि नि । लं धी सु मी व नी ली वी
दवी लं जन नीय ना ॥ यश गि गिगु पा दवी मूर्ति गय स वृ यिणी ॥ ॐ
का व व लया दवी श्री का व य व मा लमिनी ॥ दूर् का व व क का व व

ॐ कावविन्दसंयमं । दूर्ध्वदग्गो कवध्ववद्विबीजं नाम सा कव ॥
उद्यवपुष्ययथागा स्वाहानकशसुवध्ववी । रुमवध्वजिनगाव रुआ
हादगवाविणी ॥ जालीधरु रुनिस्त्रिता महिषासुवध्यामिनी ।
जिबस्त्रिताद्वनिकान्क शूलैर्ददिविदाविन ॥ महावेविविनागाः
निमहावाधाधकाविणी । उं दी वा ऊ य द द दि न्यस्य ॐ उद्यवधु
जिबस्त्रिग ॥ वियमद्वनिलिखायां त्वमम्व कवध्वनउ । ई का वी न
उ व द नै रु रु म रु रु रु रु रु ॥ नम ४ स्वाहा वी म द्वे व दू व व ध्व रु

अमुक । मजमध्वनयूकन रुययव नवध्ववी ॥ दार्णिगददनाद
वो दूर्ध्वध्ववी समव्यय न । ई का वी गज्जिग ना द रु य स्यापि रुयैक
वी ॥ जेलावयूजनीदवी यस्यध्यानिगर्थने ४ मूलिरुन्नादिरिर्ग
के ४ यूजनी यायहाव के ४ गनकात्ममहायूजा महाकृमाधिवा
सिनी । नवमीरुगयूजाव दगम्यामव वावयत् ॥ सर्ववेविविना
गानि ऊ य वू या व मा विणी । रि स र्थ य ४ व १० त्रि र्थ म क वि रु ४ स
माहि न ४ ग न मा व रु य स्यापि मव्याग सर्वयायके ४ महासंयाः
न

ॐ यादूकां ॥ धननवलिः ॥ ॐ निरुद्धका ॥ दधूजनी ॥ ॥ कउनययूज
नी ॥ ॐ ॐ ॐ दशयालाययादूकां ॥ अथ ॥ ॐ ॐ ॐ कलपूवदकनाथ
ययादूकां ॥ अथ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कलम ॥ ॐ ॐ ॐ वाययादूकां ॥ ॐ
गान ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्वथागिनीत्य ॥ यादूकां ॥ नेर्जन ॥ ॐ ॐ ॐ सिद्धिवाभू
ॐ ॐ यादूकां ॥ वयय ॥ धननवलिः ॥ ॐ ॐ ॐ वाजयदद ॥ दयाय
नमः ॥ वायय ॥ ॐ ॐ ॐ वलिनि वसस्वला ॥ अथ ॥ विदमर्दनि
निखाये वाभू ॥ ॐ ॐ ॐ गान ॥ ॐ ॐ ॐ सदा न क २ कववायदू ॥ नेर्जन ॥

ह्रीं मां शं स ४ नं नु या य व व द् ॥ म ॥ मृत्पु रु न मृत्पु य रु द् ॥ व ॥
दि न् ॥ ॥ ग मा रु प ॥ म ज या दि यू ज न ॥ नं नु ज या ये या द का ॥ १
मृत्पु वि ज या ये या द का ॥ १ मृत्पु मृत्पु जि ना ये ये या द का ॥ १ मृत्पु मृत्पु
ये ये या जि ना ये या द का ॥ १ मृत्पु मृत्पु ज रु न ये या द का ॥ १ मृत्पु
मृत्पु रु न ये या द का ॥ १ मृत्पु मृत्पु रु न ये या द का ॥ १ मृत्पु मृत्पु रु न ये या
द का ॥ ध न न व लि ४ ॥ १ ॥ ग मा रु प ॥ म ज या दि यू ज न ॥ नं नु ज या
ये ये या द का ॥ १ ॥ मृत्पु रु न ये या द का ॥ १ ॥ मृत्पु रु न ये या द का ॥

डं डं व ॥ रु या का मा नी या द का ॥ १ ॥ मृत्पु रु न ये या द का ॥ १ ॥
व ॥ रु वा ना ही या द का ॥ १ ॥ नं नु व ॥ रु व नी ॥ रु द्वा नी या द का ॥ १ ॥ डं डं व ॥ रु
वाम ॥ रु या द का ॥ १ ॥ मृत्पु ४ मृत्पु वि रु का म रु ल रु या द का ॥ १ ॥ ध न न व
लि ४ ॥ ॥ व ॥ रु ॥ रु रु रु कि नी यू ज न ॥ नं नु ज या ये ये या द का ॥ १ ॥
का ॥ १ ॥ नं नु व नी रु मृत्पु वा कि नी द वी या द का ॥ १ ॥ नं नु लं ली लं ली कि
नी द वी या द का ॥ १ ॥ नं नु कां कां कूं कूं का कि नी द वी या द का ॥ १ ॥ नं नु सां सां
सूं सूं सा कि नी द वी या द का ॥ १ ॥ नं नु हां हां हूं हूं हा कि नी द वी या द

का॥ धननवल्लि॥ ॥ शिवालयवदुष्टय० यूनन॥ जेअडंआधानया० य
यादूका॥ जेअडंआलन्यनयी० ययादूका॥ जेअयूयूगिप्रिया० यया
दूका॥ जेअकाकामनूययी० ययादूका॥ धननवल्लि॥ ॥ मध्ययष्टि
ममनूययूनन॥ जेअगूयावडं० यावडं० यावडं० सर्वन
० सर्वसर्व० स० स० वदूयड० यादूका॥ वलि॥ ॥ जेवडकवि
वि० जेलायाकवलि० कामाज्याविलि० का० म० हा० रा० का० विलि
जेस० स० धी० या० का॥ वलि॥ ॥ जेअनमारुगवनि० कवि० का० यी० का०

कौं दूं ध्या न प्रया न प्रया नामस्वि कौं दूं कि नि २ वि श्व या द कां ॥ व लि १॥ ॥
 ॐ न मा रु ग व गि सुं क षि का ये ॐ श्री कृ ष्णि रु १८ ७१ न म्य प्र या नामः
 स्वा कौं दूं कि नि २ वि श्व या द कां ॥ व लि १॥ ॥ ॐ श्री न मा रु ग व गि सि ध्दं
 कुं कुं स्व र्ग नं प्र या न प्र या नामू र्वी कौं दूं कि नि २ वि श्व या द कां ॥ व लि १॥
 ॐ श्री ग्रा न न्द ग कि रे व वा न न्द वी वा धि य न य दूं या द कां ॥
 ॐ श्री ग्रा न न्द ग कि रे व वा न न्द धी म हा ॐ वि श्वा वा ऊं
 ॐ श्री या द कां ॥ ध नं व लि १॥ य न १ मूल म रु ग

शुभाङ्गलि॥ ३ ॥ षष्ठं जनयूजनं ॥ आवाहनादि यानि मूर्धां यदङ्ग ॥
 ततः ४ स्वप्नयूजनं ॥ जेन नमो रुगवति या गणविमलावलयावाक्रमज्ज
 णवयाय पुणमनि ज्ञायवा वा गवद्धिनि सीरा गकाविलि सच्चर्थिद
 धिनि सर्वदूष्ट कृदिनि रुगवति ववयुदनम ४ स्वाहा ॥ स्वप्नया कृति
 स ॥ ॥ जेन कौण्डिण्यं रुं कवीयमाहनी रुगवती नम ४ स्वाहा ॥ स्वप्नया
 मध्यास ॥ ॥ जेन कौण्डिण्यं रुगवती सुमी कूधा वण्णकय कय कवि नम ४
 स्वाहा ॥ स्वप्नया वास ॥ ॥ लाकर्मण जिय ॥ अलि कय ॥ वलि ४ ॥

ड्यवकुंयामूलमरुणयामुलिङ्गय ॥ ३ ॥ मउंमनयूजा ॥ अवारु
 नादियानिमर्दादग्यन ॥ ॥ ननययवलि ॥ कौकौकूकय
 लायवलिङ्गक २ खादा ॥ वांवीवूवदकनाथायवलिङ्गक २ खादा
 ॥ गौगौगूकलगणधवायवलिङ्गक २ खादा ॥ यांयीयूवकुंययवलि
 यागिर्यावलिङ्गक २ खादा ॥ कुं सिद्धि वामुण्येवलिङ्गक २ खादा
 ॥ ड्यवकुंयामूलमर्गवलि ॥ ४ ॥ नंदींददकयकूविनागिनी
 मदायावायेयागिनीकाटि ॥ ५ ॥ नयैकोणवत्कालीदग्गरिहो

[illegible][illegible]